सैंधव सभ्यता के प्रमुख नगर

RAJENDRA PRASAD GUPTA

भारतीय इतिहास में नगरों का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम सैन्धव सभ्यता में हुआ। नगर एक ऐसा विशाल जनसमूह होता है जिसकी जीविका प्रधानतः उद्योग धन्धों तथा व्यापार–वाणिज्य पर निर्भर करती है। व्यवसायिक उत्पादनों के विनिमय द्वारा उसे ग्रामों से खाद्यान्न प्राप्त होता है। वैसे तो हड़प्पा संस्कृति में लगभग 1500 स्थलों का पता लग चुका है किन्तु उनमें केवल सात को ही नगर की संज्ञा दी जा सकती है। ये निम्न है–

1. हड़प्पा

हड़प्पा का पुरास्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में माण्टगोमरी जिले में (आधुनिक शाहीवाल) रावी नदी के बाएं तट पर स्थित था। हड़प्पा टीले के बारे में प्रथम उल्लेख चार्ल्स मैस्सन ने 1826 ई0 में किया था। 1853 और 1873 में पुरातत्वविद् जनरल अलेक्जेण्डर कर्निंधम ने सर्वेक्षण करके यहां सभ्यता के होने का निष्कर्ष निकाला भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक जॉन मार्शल के निर्देश पर 1921 ई0 में दयाराम साहनी ने इसकी खोज की।

हड़प्पा क्षेत्रफल की दृष्टि से सिन्धु सभ्यता का दूसरा सबसे बड़ा स्थल है। यह लगभग 150 हेक्टेयर के घेरे में बसा हुआ था। अनुमानतः हड़प्पा का मूल नगर 5 मील के घेरे में था। इसके दुर्ग के टीले को AB नाम दिया गया। दुर्ग के बाहर उत्तर दिशा में स्थित लगभग 6 मी0 ऊँचे टीले को F नाम दिया गया। इसी टीले पर अन्नागार, अनाज कूटने के वृत्ताकार चबूतरे और श्रमिक आवास के साक्ष्य मिले है। हड़प्पा के F टीले में पकी हुई ईंटों से निर्मित 18 वृत्ताकार चबूतरे मिले हैं जिनका उपयोग अनाज पीसने के लिए होता था। इसी टीले पर श्रमिक आवास भी मिला है। इस आवास में 15 महान दो पंक्ति पर में बनाये गए थे। इस बस्ती के समीप 16 भट्ठियों और धातु बनाने की एक मूषा (Crucible) मिली है। संभवता इस बस्ती में ताम्रकार रहते थे।

हड़प्पा नगर क्षेत्र के दक्षिण दिशा में एक कब्रिस्तान मिला है, जिसे समाधि R–37 (Cemetry R-37) नाम दिया गया है।

हड़प्पा में ही सन् 1934 ई0 में अन्य समाधि मिली थी, जिसे समाधि H (Cemetry H) नाम दिया गया। इसका सम्बन्ध सिन्धु सभ्यता के बाद के काल से था।

2. मोहन जोदड़ोः–

यह पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाहिने तट पर स्थित था। यह क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा नगर था, जो 250 हेक्टेयर में बसा था। इसकी जनसंख्या सर्वाधिक थी। 'मोहन जोदड़ो' का सिंधी भाषा में अर्थ होता है ''मृतकों काा टीला''। इसे ''सिन्धु का बाग'' भी कहा जाता है। मोहनजोदड़ो की खोज 1922ई0 में राखालदास बनर्जी ने की।

मोहनजोदड़ो के दुर्ग टीले को स्तूप टीला भी कहते हैं, क्योंकि इस टीले पर कुषाण काल का एक स्तूप बना है। दुर्ग के टीले पर ही स्नानागार, अन्नागार, सभा भवन एवं पुरोहित आवास बने हुए है।

स्नानागारः– मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल स्नानागार। इसका जलाशय दुर्ग के टीले में है। यह 11.88 मी0 लम्बा, 7.01 मी0 चौड़ा और 2.43मी0 गहरा है। दोनों सिरों पर तल तक सीढ़ियाँ बनी हुई है। स्नानागार का फर्श पकी ईटों का बना है। पास के कमरे में बड़ा सा कुआँ है। इससे पानी निकालकर हौज में डाला जाता था। स्नानागार के दक्षिण पश्चिम से गन्दा पानी निकालने के लिए नाली बनायी गयी थी। इस विशाल स्नानागार का उपयोग सार्वजनिक रूप से धर्मानुष्ठान सम्बन्धी स्नान के लिए होता था। मार्शल ने विशाल स्नानागार को तत्कालीन विश्व का आश्चर्यजनक निर्माण बताया है।

अन्नागारः–

व्हीलर के अनुसार मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार या अन्नकोठार है। यह 45.71 मी0 लम्बा और 15.23 मी0 चौड़ा है।

सभाभवन :–

दुर्ग के दक्षिण में 27x27 मी0 के आकार का वर्गाकार भवन प्राप्त हुआ है। इसे सभा भवन की संज्ञा दी गयी है।

पुरोहित आवासः

स्नानागार के उत्तर–पूरब में 70.1x 23.77 मी0 के आकार का विशाल भवन मिला है। इसे पुरोहित आवास कहा गया है।

मोहनजोदड़ो के पूर्वी टीले को HR. VS तथा DK क्षेत्रों में बाँटा गया था इसमें HR क्षेत्र अत्यन्त प्रसिद्ध है। HR क्षेत्र से काँसे की नर्तकी की मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। मोहनजोदड़ो में कुल 21 मानव कंकाल प्राप्त हुए है परन्तु यहाँ किसी कब्रिस्तान का उल्लेख नहीं है।

हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो एक दूसरे से 482 किमी0 दूर सिन्धु नदी द्वार जुड़े थे। पिग्गट महोदय ने इन नगरों को सिन्धु सभ्यता की जुड़वा राजधानियाँ कहा है।

3. चन्हूदड़ोंः–

यह सिन्धु नदी के बाएं तट पर स्थित था। इसकी खोज 1931 ई0 में एन0जी0 मजूमदार ने की। उत्खनन में सबसे नीचे सिंधु संस्कृति, उसके ऊपर झूकर–संस्कृति और फिर झांगर–संस्कृति के अवशेष पाये गये। सैंधव संस्कृति के तीन चरण हैं। मैंके ने यहाँ से मनके बनाने का कारखाना खोजा है। यहाँ से एक ऐसी मुद्रा मिली है। जिस पर तीन घड़ियाल तथा दो मछलियों का अंकन है। यहीं से ईंटो पर एक बिल्ली का पीछा करते हुए कुत्ते के पंजो का निशान है। यह एक मात्र ऐसा स्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटे मिली हैं। यहाँ से लिपिस्टिक, काजल, कंघा, उस्तरा, आदि के प्रमाण भी मिले हैं। चन्हूदड़ो एकमात्र ऐसा स्थल है जहाँ पर मिट्टी की पकी हुई पाइपनुमा नालियों का प्रयोग किया गया है।

लोथल–

इसे लघु हड़प्पा या लघु मोहनजोदड़ो भी कहा जाता है। इसकी खोज 1954 ई0 में एस0आर0 राव ने की। यह गुजरात के अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के किनारे स्थित है। लोथल के पूर्वी भाग में एक गोदीवाड़ा का साक्ष्य मिला है। इसकी लम्बाई 223मी0, चौड़ाई 35मी0 तथा गहराई 38मी0 थी। गोदीवाड़ा के उत्तरी दीवार में 12 मी0 चौड़ा एक प्रवेश द्वार था। जिससे जहाज आते–आते थे और दक्षिणी दीवार में अतिरिक्त जल का निकास द्वार था। इस प्रकार इस नगर में जल प्रबंधन की सबसे उत्तम व्यवस्था थी।

लोथल में नगर क्षेत्र के बाहर उत्तरी–पश्चिमी किनारे पर समाधि क्षेत्र था, जहाँ से 20 समाधियाँ मिली हैं। लोथल से तीन युग्मित समाधियों के उदाहरण भी मिले हैं, जिससे यहाँ सती प्रथा का अनुमान लगाया जाता है। लोथल से एक अग्निकुण्ड का अवशेष भी मिला है। लोथल के दुर्ग क्षेत्र से 126मी0 लम्बा एवं 30मी0 चौड़ा एक भवन मिला है जिसे प्रशासनिक भवन की संज्ञा दी गई। लोथल से भी चन्हूदड़ो की भाँति मनके बनाने का कारखाना प्राप्त हुआ हैं। यहाँ से एक रंगाई कुण्ड मिला है, जो निचले नगर में स्थित था।

5. बनवाली

यह स्थल हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती नदी के किनारे स्थित था। इसकी खोज 1974ई0 में आर0एस0 विष्ट ने की। यहाँ से मिट्टी का बना हल तथा बढ़िया किस्म का जौ प्राप्त हुआ है। बनवाली में सिन्धु सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जल–निकास प्रणाली का अभाव था। यहाँ से प्राक् हड़प्पा, हड़प्पा एवं हड़प्पोत्तर काल के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यहाँ के मकानों के साज–समान से पता चलता है कि यह समृद्ध लोगों का नगर था। बनवाली के कई मकानों से अग्निवेदियाँ मिली हैं। इनके साथ अर्द्धवृत्ताकार ढांचे हैं जिसके आधार पर कुछ विद्वान यहाँ मन्दिर होने की सम्भावना व्यक्त करते है।

6. कालीबंगा

कालीबंगा का अर्थ है–काले रंग की चूड़ियाँ। 100 हेक्टेयर में बसे, राजस्थान के गंगानगर जिले में स्थित इस नगर की खोज सन् 1951 ई0 में अमलानन्द घोष ने की। यह

प्राचीन सरस्वती एवं दृष्द्वती नदियों के बीच स्थित था। सरस्वती का आधुनिक नाम घग्घर एवं दृष्ती का चौतंग है। सरस्वती नदी के किनारे घग्घर–हाकरा पाटपर पर सर्वाधिक स्थलों का संकेन्द्रण था। कालीबंगा के पश्चिमी टीले पर सैन्धव सभ्यता के नीचे प्राक्–सैन्धव संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इन प्रमाणों में हल से जुते हुए खेत का साक्ष्य सबसे महत्वपूर्ण है इसकी जुताई आड़ी–तिरछी की गयी थी, जिससे दो फसलों के एक साथ बोये जाने का अनुमान लगाया जाता है।

कालीबंगा के दुर्ग टीले के दक्षिणी भाग में मिट्टी और कच्ची ईंटो के बने हुए पाँच, छः चबूतरे मिले है, जिनके ऊपर कई अग्निकुण्ड या वेदिकाएँ बनी हुई मिली है, जो कि आयताकार है।

कालीबंगा में दुर्ग वाले टीले के दक्षिण–पश्चिम में लगभग 300 मीटर की दूरी पर कब्रिस्तान स्थित था। यहाँ से शव विसर्जन के 37 उदाहरण मिले हैं यहाँ अंत्येठिर संस्कार की तीनों विधियों–पूर्ण समाधीकरण, आंशिक समाधीकरण एवं दाह संस्कार के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ से एक युगल शवाधान भी प्राप्त हुआ है। यहाँ से अण्डाकार कब्रें भी प्राप्त हुई जिससे एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छिद्र किये जाने का प्रमाण है इसे शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण माना जा सकता है।

कालीबंगा के मकान कच्ची ईंटो के बने हैं। नगर टीले से अलंकृत ईंटो के प्रयोग के प्रमाण मिले हैं। कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलू या शहरी जल निकास प्रणाली नहीं थी। यहाँ पर भूकम्प के सबसे प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

7. धौलावीरा

यह नगर गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊ तालुका में रवादिर नाम के एक द्वीप जिसे स्थानीय भाषा में बैठ कहते है, के उत्तरी–पश्चिमी कोने पर बसा हुआ एक छोटा सा गाँव है। 100 हेक्टेयर में बसे धौलवीरा के टीलो की खोज सन् 1967–68 ई0 में श्री जे0पी जोशी ने की। 1990 ई0 से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के आर0एस0 विष्ट के निर्देशन में उत्खनन कार्य अभी चल रहा है।

धौला का अर्थ सफेद तथा वीरा का कुँआ है यहाँ के टीले पर एक पुराना कुँआ है, जिसके कारण इसका नाम धौलावीरा पड़ गया। धौलावीरा का नगर आयताकार बना था। इस नगर को तीन भागों किला, मध्य नगर एवं निचला नगर में विभाजित किया गया था। यह भारत में स्थित सिन्धु सभ्यता का दूसरा सबसे बड़ा नगर है। यहाँ के उत्खनन से हड़प्पा संस्कृति के तीन चरणों का पता चला है। यहाँ से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण पुरावशेष है, घोड़े के अवशेष एवं पशु की छोटी कांस्य आकृति। यहाँ से एक ऐसा अभिलेख प्राप्त हुआ है, जिसके 9 वर्ण है और प्रत्येक 37 सेमी0 लम्बे और 27 सेमी0 चौड़े है, और जो दूधिया सफेद पदार्थ के कटे टुकड़ों से अभिलिखित है। हड़प्पा सभ्यता का एक मात्र 'स्टेडियम'' (क्रीड़ागार) यहीं से प्राप्त हुआ है। इसके अलावा एक ''नेबले की पत्थर'' की मूर्ति (37 सेमी) भी पायी गयी है लेकिन यहाँ की सबसे आश्चर्यजनक वस्तु विशाल जलाशय है, इसका आकार 80.4मी0x12मी0 था और गहराई 7.5मी0 थी, इसमें 2 लाख 50 हजार घन मी0 पानी जमा करने की अद्भूत क्षमता थी। धौलावीरा के निवासी जल संरक्षण की तकनीक जानते थे उन्होंने बाँध बनाये और जलाशयों में पानी संग्रहीत किया। धौलावीरा में एक बड़ा उत्कीर्ण लेख सम्भवतः गिरा हुआ साइनबोर्ड, मुख्य प्रवेश द्वार के पास मिला है। इस लेख के वर्ण किसी भी हड़प्पाई नगर से अब तक प्राप्त लिखावट के सबसे बड़े नमूने है यह लिखावट एक काठ की तख्ती पर खुदाई करके उसमें सफेद चूना भरकर तैयार की गई है। इसमें 10 संकेताक्षर है, जिनमें से प्रत्येक की ऊँचाई 37 सेमी0 और चौड़ाई 25 से 27 सेमी0 है। धौलावीरा के नगर के पश्चिम की ओर स्थित कब्रिस्तान के उत्खनन से कई तरह के शवाधान मिले है जो धौलावीरा की विशिष्ट विशेषता है। यहाँ पॉलिशदार श्वेत पाषाण खण्ड बड़ी संख्या में प्राप्त हुये है।

राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता
नेट–इतिहास
U.G.C नई दिल्ली

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य से हमारा तात्पर्य चारों वेद, विभिन्न ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषदों से है। उपवेद अत्यन्त परवर्ती होने के कारण वैदिक साहित्य के अंग नहीं माने जाते। इन्हें वैदिकोत्तर साहित्य के अन्तर्गत रखा जाता है। वैदिक साहित्य श्रुति नाम से विख्यात है। श्रुति का अर्थ है सुनकर लिखा हुआ साहित्य। यह वह साहित्य है जो मनुष्यों द्वारा लिखा नहीं गया अपितु जिन्हें ईश्वर ने ऋषियों को आत्म ज्ञान देकर उनकी सृष्टि की है तथा ऋषियों द्वारा यह कई पीढ़ियों तक अन्य ऋषियों को मिलता रहा। इसी कारण वैदिक साहित्य को अपौरूषेय और नित्य कहा जाता है, पहले के तीन वेदों ऋग्वेद, सामवेद एवं यजुर्वेद को वेदप्रयी कहा जाता है। अथर्ववेद इसमें सम्मिलित नहीं हैं क्योंकि इसमें यज्ञ से भिन्न लौकिक विषयों का वर्णन है।

1. ऋग्वेद.

यह आर्यों का सबसे प्राचीन ग्रंथ है। ऋक् का अर्थ होता है छन्दोबद्ध रचना या श्लोक। ऋग्वेद के सूक्त विविध देवताओं की स्तुति करने वाले भाव भरे गीत है, इनमें भक्ति–भाव की प्रधनता है। यद्यपि ऋग्वेद में अन्य प्रकार के सूक्त भी हैं, परन्तु देवताओं की स्तुति करने वाले स्त्रोतों की प्रधानता हैं। ऋग्वेद की रचना सम्भवतः सप्तसैंधव प्रदेश में हुई है। इसमें कुल 10 मण्डल 1028 सूक्त या (1017 सूक्त) एवं 10580 मंत्र हैं। मंत्रों को ऋचा भी कहा जाता है। सूक्त का अर्थ है ''अच्छी उक्त''। प्रत्येक सूक्त में तीन से सौ तक मंत्र या ऋचाएं हो सकती है। वेदों का संकलन महर्षि कृष्ण द्वैपायन ने किया। इसीलिए इनका एक नाम ''वेदव्यास'' भी है।

ऋग्वेद के ज्यादातर मंत्र देव आहवान से सम्बन्धित है। ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण कर जो पुरोहित यज्ञ सम्पन्न कराता था उसे 'होता' कहा जाता था।

ऋग्वेद के तीन पाठ मिलते हैं–

1. साकल– 1017 सूक्त है।

2. बालखिल्य– इसे आठवें मण्डल का परिशिष्ट माना जाता हैं इसमें कुल 11 सूक्त हैं।

3. वाष्कल– इसमें कुल 56 सूक्त हैं परन्तु यह उपलब्ध नहीं हैं।

ऋग्वेद के 2 से 7 तक के मण्डल सबसे पुराने माने जाते हैं पहला, आठवाँ नौवाँ और दसवाँ मण्डल परवर्ती काल का है। दसवाँ मण्डल, जिसमें पुरूष सूक्त भी है, सबसे बाद का है। प्रत्येक मण्डल और उससे सम्बन्धित ऋषि निम्नलिखित हैं

मण्डल	**सम्बन्धित ऋषि**
प्रथम	मधुच्छन्दा, दीर्घतमा और अंगिरा
द्वितीय	गृत्समद
तृतीय	विश्वामित्र (गायत्री मंत्र का उल्लेख है)
चौथा	वामदेव (कृषि सम्बन्धित प्रक्रिया)
पाँचवाँ	अत्रि
छठाँ	भारद्वाज
सातवाँ	वशिष्ठ
आठवाँ	कण्व ऋषि (इसी में 11 सूक्तों का बालखिल्य परिशिष्ट माना जाता है।)
नौवाँ	पवमान अंगिरा (सोम का वर्णन)
दसवाँ	क्षुद्रसूक्तीय, महासूक्तीय,

ऋग्वेद के रचना काल के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है बाल गंगाधर तिलक ज्योतिष गणना के आधार पर ईसापूर्व 6000 से इस सभ्यता का प्रारम्भ मानते हैं। जिस समय वेदों का सृजन हुआ उस समय कोई लेखन प्रणाली प्रचलित नहीं थी, अपने गुरूओं से मंत्रों का श्रवण

कर कंठस्थ किया हुआ यह साहित्य लगभग पिछले तीन हजार वर्षो से यथावत विद्यमान है। इसे आलेखित बहुत बाद में किया गया है।

ब्राह्मण ग्रंथ–ये वेदों के गद्य भाग है जिनके द्वारा वेदों को समझने में सहायता मिलती है। ऋग्वेद के दो ब्राह्मण है– ऐतरेय तथा कौषीतकी।

ऐतरेय ब्राह्मण के संकलनकर्ता महिदास थे। उनकी माँ का नाम 'इतरा' था। इतरा पुत्र होने के कारण वे महिदास ऐतरेय कहलाए और उनके द्वारा रचति ब्राह्मण ऐतरेय– ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसमें राज्याभिषेक के विभिन्न यज्ञ विधानों का विवेचन मिलता है। इसमें सोमयज्ञ का विस्तृत वर्णन तथा शुनः शेप आख्यान है। ऐतरेय ब्राह्मण में अथाह अनन्त जलधि और पृथ्वी को घेरने वाले समुद्र का उल्लेख है।

कौषीतकी ब्राह्मण के संकलनकर्ता कुषितक ऋषि थे। कौषीतकी अथवा शंखायन ब्राह्मण में विभिन्न यज्ञों का वर्णन मिलता है।

आरण्यक– आरण्यक शब्द का अर्थ बन में लिखा जाने वाला और इन्हें वन–पुस्तक कहा जाता है। यह मुख्यतः जंगलों में रहने वाले सन्यासियों और छात्रों के लिए लिखी गयी थी। ये ब्राह्मणों के उपसंहारात्मक अंश अथवा उनके परिशिष्ट है। इनमें दार्शनिक सिद्धान्तों और रहस्यवाद का वर्णन है। आरण्यक कर्मयोग तथा ज्ञानमार्ग के बीच सेतु का कार्य करते है।

ऋग्वेद के दो आरण्यक है– ऐतरेय व कौषीतकी

उपनिषद– उपनिषद शब्द ''उप'' और 'निष' धातु से बना है। उप का अर्थ है समीप और 'निष' का अर्थ है बैठना, अर्थात इसमे छात्र, गुरू के पास बैठकर ज्ञान सीखता था, ये वेदों के अन्तिम भाग है। अतः इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है। कुल उपनिषदों की संख्या 108 है परन्तु दस उपनिषद ही विशेष महत्व के है और इन्हीं पर आदिगुरू शंकराचार्य ने भाष्य लिखा है। ये दस उपनिषद ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्ड्क्य छांदोग्य, वृहदारण्यक, ऐतरेय एवं तैत्तिरीय हैं। इनमें मुख्यतया आत्मा और ब्रह्म का वर्णन है।

ऋग्वेद के दो उपनिषद ऐतरेय और कौषीतकी है।

2. सामवेद–

''साम'' का अर्थ है गायन। इसमें कुल मंत्रों की मौलिक संख्या 1549 है। इन मंत्रों में इसके मात्र 75 मंत्र ही है शेष ऋग्वेद से लिए गये हैं। अतः इसे ऋग्वेद से अभिन्न माना जाता है।

सामवेद के मंत्रो का गायन करने वाला उद्गाता कहलाता है। सप्तस्वरों का उल्लेख सामवेद में मिलता है ''सा.....रे.....गा.....मा।'' सामवेद की मुख्यतः तीन शाखाएं है–क्रौथुम, राणायनीय, एवं जैमिनीय।

ब्राह्मण ग्रन्थ–

सामवेद के मूलतः दो ब्राह्मण हैं ताण्ड्य और जैमिनीय। ताण्ड्य ब्राह्मण बहुत बड़ा है। इसीलिए इसे महाब्रह्मण भी कहते हैं। यह 25 अध्यायों में विभक्त है, इसलिए इसे पंचविश भी कहा जाता है। षड्विश ब्राह्मण, ताण्ड्य ब्राह्मण के परिशिष्ट के रूप में है। इसे ''अदभुत'' ब्राह्मण भी कहते हैं।

जैमिनीय ब्राह्मण में याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन है।

आरण्यक– इसके दो आरण्यक है–जैमिनीय आारण्यक व छांदोग्यारण्यक।

उपनिषद–

सामवेद के दो उपनिषद् हैं– छान्दोग्य उपनिषद एवं जैमिनीय उपनिषद्। छांदोग्य उपनिषद सबसे प्राचीन उपनिषद माना जाता है। देवकी पुत्र कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख इसी में है। इसमें प्रथम तीन आश्रमों का तथा ब्रह्म एवं आत्मा की अभिन्नता के विषय में उद्दालक आरूणि एंव उनके पुत्र श्वेतकेतु के बीच विख्यात संवाद का वर्णन है।

3. यजुर्वेद–

यह एक कर्मकाण्डीय वेद है। इसमें विभिन्न यज्ञों से सम्बन्धित अनुष्ठान विधियों का उल्लेख है। यह वेद गद्य एवं पद्य दोनों मे रचित है। यह 40 अध्यायों में विभाजित है। इसमें कुल 1990 मंत्र संकलित है। यजुर्वेद के कर्मकाण्डों को सम्पन्न कराने वाले पुरोहित को ''अध्वर्यु'' कहा जाता है। यजुर्वेद की दो शाखाएं है– शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद।

शुक्ल यजुर्वेद को बाजसनेयी संहिता भी कहते हैं। इसकी दो शाखाएं काण्व और माध्यदिन है। अधिकांश विद्वान शुक्ल यजुर्वेद को ही वास्तविक वेद मानते है।

कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएं है काठक संहिता, कपिष्ठल संहिता, मैत्रेयी संहिता और तैत्तिरीय संहिता कृष्ण यजुर्वेद में मंत्रो की व्याख्या गद्य रूप में मिलती है।

ब्राह्मण ग्रन्थ–

शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक ब्राह्मण ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण है। यह सबसे प्राचीन तथा सबसे बड़ा ब्राह्मण माना जाता है। इसके लेखक महर्षि याज्ञवल्क्य है। शतपथ ब्राह्मण में जल–प्लावन कथा, पुनर्जन्म का सिद्धान्त, पुरूरवा–उर्वशी आख्यान, रामकथा तथा आश्विन कुमार द्वारा च्यवन ऋषि को यौवन दान का वर्णन है।

कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण का नाम तैत्तिरीय ब्राह्मण है।

आरण्यक– यजुर्वेद के आरण्यक वृहदारण्यक तैत्तिरीय और शतपथ है।

उपनिषद्– यजुर्वेद के उपनिषद् वृहदारण्यक उपनिषद्, कठोपनिषद, ईशोपनिषद, श्वेताश्वतर उपनिषद्, मैत्रायण उपनिषद् एवं महानारायण उपनिषद् है।

वृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञ वल्क्य– गार्गी का प्रसिद्ध संवाद, तैत्तिरीय उपनिषद् में ''अधिक अन्न उपजाओं'' एवं कठोपनिषद में ''यम और नाचिकेता के बीच प्रसिद्ध संवाद का वर्णन है। इस उपनिषद् में आत्मा को पुरूष कहा गया है।

4. अथर्ववेद–

अथर्वा ऋषि के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा। अंगिरस ऋषि के नाम पर इसका एक नाम ''अथर्वांगिरस'' भी पड़ गया। अथर्व शब्द ''अथर'' एवं वाणि शब्दों के संयोजन से बना है। इसका तात्पर्य है जादू–टोना, कुछ विद्वान अथर्वन का वास्तविक अभिप्राय अग्नि उद्‌बोधन करने वाला पुरोहित मानते हैं। किसी यज्ञ में कोई बाधा आने पर उसका निराकरण अथर्ववेद ही करता था। अतः इसे ब्रह्मवेद या श्रेष्ठवेद कहा गया। अथर्ववेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले पुरोहित को ब्रह्मा कहा जाता था। चोरों वेदों में यही वेद सर्वाधिक लोकप्रिय था। अथर्ववेद में भी पद्य के साथ–साथ गद्य के अंश भी प्राप्त होते है।

अथर्ववेद में 20 अध्याय, 731 सूक्त और 6000 मंत्र है। इस वेद में वशीकरण, जादू–टोना, मरण, भूत–प्रेतों आदि के मंत्र तथा नाना प्रकार की औषधियों का वर्णन है। इसमें जन साधारण के लोकप्रिय विश्वासों और अन्धविश्वासों का वर्णन हैं इसकी अधिकांश ऋचाएं दुरात्माओं या प्रेतात्माओं से मुक्ति का मार्ग बताती है।

अथर्ववेद में मगध और अंग का उल्लेख सुदूरवर्ती प्रदेशों के रूप में किया गया है। इसी में सभा और समिति को प्रजापत्य की दो पुत्रियां कहा गया है। इसमें परीक्षित का उल्लेख मिलता है।

अथर्ववेद की दो शाखाएं शौनक और पिप्पलाद है।

ब्राह्मण– इसका एक मात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है। जिसे गोपथ ऋषि ने संकलित किया है।

आरण्यक– अथर्ववेद का कोई आरण्यक नहीं है।

उपनिषद्–मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद, प्रश्नोपनिषद।

मुण्डकोपनिषद् में सत्यमेव जयते एवं यज्ञों को टूटी–फूटी नोकाओं के समान कहा गया हैं, जिसके द्वारा जीवन रूपी भवसागर को पार नहीं किया जा सकता, आदि का उल्लेख मिलता है। माण्डूक्योपनिषद सभी उपनिषदों में छोटा है।

राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता
नेट–इतिहास
U.G.C नई दिल्ली